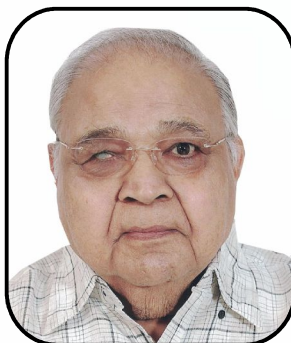


Padma Shri



SHRI CHANDRAKANT BALVANTRAY SOMPURA

Shri Chandrakant Balvantray Sompura is a renowned temple architect known to have contributed in numerous temples holding high religious value.

2. Born on 8th November, 1943, in Palitana Gujarat, Shri Sompura started his architecture journey in his early age. In 1967, after the demise of his father, his grandfather (an esteemed and famous architect, Shri Prabhashankar O. Sompura) became the guidance for him. Shri Sompura in 1967 was dealing in Marble who later joined the family business of temple Architecture. At the renovation site of Shamlaji Temple, he received the practical knowledge where he simultaneously continued the study of literature by sculpture. He had the opportunity to work for 15 years with his renowned grandfather. He also gained the experience of publication of literature in shilpshastra. With the guidance of his grandfather, he designed the creative art pieces, notably, Shri Hastagiri 72 Jinalaya, Palitana, Gujarat; Shri Sheshshayi Vishnu Temple, Nagada, Madhya Pradesh and Shri Renukuteshwar Mahadev Temple, Uttar Pradesh.

3. In 1979, Shri Sompura took charge of the well-organized business set by his late grandfather, leading many projects to completion. His mission continued to keep this architecture alive and giving it the prosperity his grandfather aimed to get. He further kept evolving his architecture and applied the skills in designing valuable temple exemplifying the art in temples such as Akshar Dham – Gandhinagar; Shiva Temple-Singapore, Vishnu Mandir, Bangkok, Indonesia; Swami Narayan Temple – London, Ambaji Mataji – Ambaji, Jain Darasar - (Chicago and Houston U.S.A.), Swaminarayan Temple - Surat and Mumbai; 108, Parshwanth Bhakti Vihar – Shankheshwar, Sanvariaji Mandir Chitor, Nritya Mandap of Somnath Temple at Prabhas Patan, Bahucharaji Mandir, Bhavnagar, Gujarat.

4. Temples such as the 'Akshardham' and temples abroad made Shri Sompura prominent in the field. Plans for Shri Rama Temple at Ayodhya prepared by him is under construction as his manifestation with his guidance. In the sphere of publication, preparation of various drawings in "Pratima Kala Nidhi" and "Vastu Kala Nidhi" are his contributions. He completed the publication of "Vastu Ni Ghantu" left unfinished by his grandfather with his prime focus developing temples. He intends to publish two incomplete volumes and reprint the invaluable works of his late grandfather in near future.

5. Shri Sompura is a recipient of several honours and awards. He has received special Award for 'Architect and Design' for his master work Swami Narayan Temple at London for 1995. He has received awards from 'The Indian Institutes of Architects' for his works around India. The recognitions from various news and publication like the 'ABP Asmita Sanman Puruskur' and 'News 18 India Amrit Ratna Award' are under his name. 'Shri Guruji Puruskar', 'Stone federation Natural Stone Award', 'JCARC award', 'Shri Bhagwat Bhavan' marks some of his recognitions by organization for his contributions.



श्री चंद्रकांत बलवंतराय सोमपुरा

श्री चंद्रकांत बलवंतराय सोमपुरा प्रसिद्ध मंदिर वास्तुकार हैं, इन्हें उच्च धार्मिक महत्व वाले अनेक मंदिरों के निर्माण में इनके योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 8 नवंबर, 1943 को पलिताना गुजरात में जन्मे, श्री सोमपुरा ने अपनी वास्तुकला की यात्रा कम उम्र में ही शुरू कर दी थी। वर्ष 1967 में, उनके पिता के निधन के पश्चात, उनके दादा (प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध वास्तुकार, श्री. प्रभाशंकर ओ. सोमपुरा) ने मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। श्री सोमपुरा वर्ष 1967 में संगमरमर का कारोबार करते थे और उन्होंने बाद में मंदिर वास्तुकला के पारिवारिक व्यवसाय को अपना लिया। शामलाजी मंदिर के जीर्णोद्धार स्थल पर, उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ, जहाँ उन्होंने मूर्तिकला के माध्यम से समानांतर रूप से साहित्य का अध्ययन जारी रखा। उन्हें अपने प्रसिद्ध दादा के साथ 15 वर्ष तक काम करने का सुअवसर मिला। उन्होंने शिल्पशास्त्र में साहित्य के प्रकाशन का अनुभव भी प्राप्त किया। अपने दादा के मार्गदर्शन में, उन्होंने रचनात्मक कलाकृतियों का रूपांकन किया, इन कलाकृतियों में श्री हस्तगिरि 72 जिनालय, पालिताना, गुजरात; श्री शेषशायी विष्णु मंदिर, नागदा, मध्य प्रदेश एवं श्री रेणुकूटेश्वर महादेव मंदिर, उत्तर प्रदेश शामिल हैं।

3. वर्ष 1979 में, श्री सोमपुरा ने अपने दिवंगत दादा द्वारा स्थापित संगठित व्यवसाय की कमान संभाली, तथा कई परियोजनाओं को पूरा किया। उनका ध्येय इस वास्तुकला को जीवित रखना तथा इसे वह समृद्धि प्रदान करना था, जिसका लक्ष्य लेकर उनके दादा चले थे। उन्होंने अपनी वास्तुकला को और निखारा तथा अक्षर धाम—गांधीनगर; शिव मंदिर—सिंगापुर, विष्णु मंदिर, बैंकॉक, इंडोनेशिया; स्वामी नारायण मंदिर—लंदन, अम्बाजी माताजी—अम्बाजी, जैन देरासर—(शिकागो और ह्यूस्टन, यूएसए), स्वामीनारायण मंदिर—सूरत और मुंबई; 108, पार्श्वनाथ भक्ति विहार—शंखेश्वर, सांवरियाजी मंदिर चित्तौड़, प्रभास पाटण में सोमनाथ मंदिर का नृत्य मंडप, बहुचराजी मंदिर, भावनगर, गुजरात जैसे मंदिरों में कला का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए मूल्यवान मंदिरों के विन्यास में अपने कौशल का प्रयोग किया।

4. 'अक्षरधाम' जैसे मंदिरों और विदेशों में मंदिरों ने श्री सोमपुरा को इस क्षेत्र में प्रमुख स्थान दिलाया। अयोध्या में श्री राम मंदिर की योजना उन्होंने ही तैयार की है जिसका निर्माण उनके मार्गदर्शन में और उनकी कल्पनानुसार किया जा रहा है। प्रकाशन के क्षेत्र में, "प्रतिमा कला निधि" और "वास्तु कला निधि" में कई चित्रों के निर्माण में उनका योगदान है। उन्होंने अपने दादा द्वारा अधूरे छोड़े गए "वास्तु नी घंटू" का प्रकाशन पूरा किया जिसमें प्रमुख रूप से मंदिरों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उनका लक्ष्य निकट भविष्य में दो अधूरे खंडों का प्रकाशन और अपने दिवंगत दादाजी की अमूल्य कृतियों का पुनः प्रकाशन है।

5. श्री सोमपुरा को कई सम्मान और पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें वर्ष 1995 में लंदन में स्वामी नारायण मंदिर के लिए 'वास्तुकार और डिजाइन' के लिए विशेष पुरस्कार मिला है। उन्हें भारत भर में उनके कार्यों के लिए 'इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ आर्किटेक्ट्स' से पुरस्कार मिल चुके हैं। उन्हें कई समाचार चैनलों और प्रकाशनों से सम्मान प्राप्त हुआ है जैसे कि 'एबीपी अस्मिता सम्मान पुरस्कार' और 'न्यूज 18 इंडिया अमृत रत्न पुरस्कार' उन्हें मिल चुके हैं। 'श्री गुरुजी पुरस्कार', 'स्टोन फेडरेशन नेचुरल स्टोन पुरस्कार', 'जेसीएआरसी पुरस्कार', 'श्री भागवत भवन' कुछ ऐसे ही पुरस्कार हैं जिन्हें उनके योगदान के लिए प्रदान किया गया है।